कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

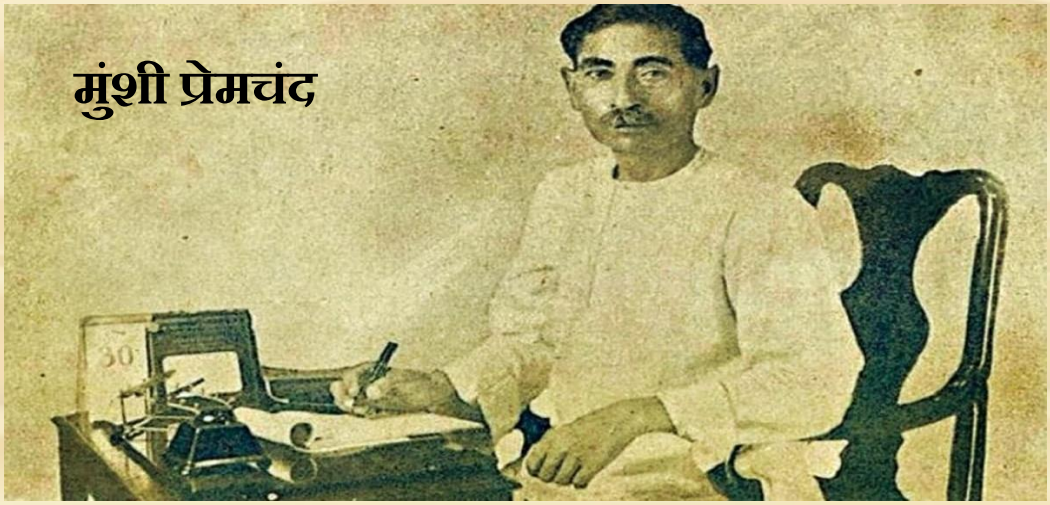

हिंदी भारती

जुलाई – 2018

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. सोनाली राउत

कु. सस्मिता महंती

संपादकीय

"हिंदी भारती" का जुलाई अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। "हिंदी भारती" के सभी पाठकों को -

"प्रेमचंद जयंती तथा मित्रता दिवस की शुभकामनायें"

"हिंदी भारती" के इस अंक में विभाग की छात्राओं ने "प्रेमचंद जयंती" का पालन किया है। हमारी ई - पत्रिका ने हमेशा प्रयास किया है कि छात्राओं को प्रोत्साहित करती रहे और उनमें छुपी सृजनात्मकता को तथा नेतृत्व तथा प्रबंधन को अवसर प्रधान करती रहे। अतः इस अंक में इस ओर ध्यान देते हुए संपादक मंडल में नवीन छात्राओं को स्थान दिया गया है। पत्रिका के इस अंक में भी विशिष्ठ पाठकों एवं विद्वद्जनों के संदेशों और सुझावों को "आपकी बात" शीर्षक के अंतर्गत शामिल किया है। "आपकी बात" हमारे लिये अखण्ड प्रेरणा का स्रोत है।

हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका को आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ. सं.
1.	कथा सम्राट - मुंशी प्रेमचंद	लेख	पिंकी सिंह	5
2.	दो बैलों की कथा	कहानी	प्रेमचंद	8
3.	अहिंसक समाज के लिये शिक्षा	लेख	प्रोफेसर मंजू रानी सिंह	15
4.	हिंदी साहित्य में राम काव्य परंपरा	लेख	लिज़ा मिश्र	21
5.	फैसला	कहानी	पिंकी सिंह	26
6.	भारतीय संगीत कला	लेख	निहारिका	28
7.	पाप की परिभाषा	नीति	शरीफा शरवारी	30
8.	एकता का महत्व	नीति	शरीफा शरवारी	30
9.	सोच	लघु कथा (संगृहित)	सस्मिता महंती	31
10.	बीज	विचार	सोनाली राउत	32
11.	नारी शक्ति	लेख	कादम्बिनी पण्डा	34
12.	शोषण	लेख	सोनिया नायक	36
13.	चिरैया	कविता(संगृहित)	मनीषा साहू	38
14.	मेरी गुरु माँ	कविता	श्रद्धांजली भऊल	38
15.	ज़िंदगी के मैदान में	कविता(संगृहित)	लिज़ालीन	39
16.	कोलकाता	कविता	शबाना बेगम	40
17.	आपकी बात	आपके विचार		41
16.		यू ट्यूब लिंक		44
17.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ		45

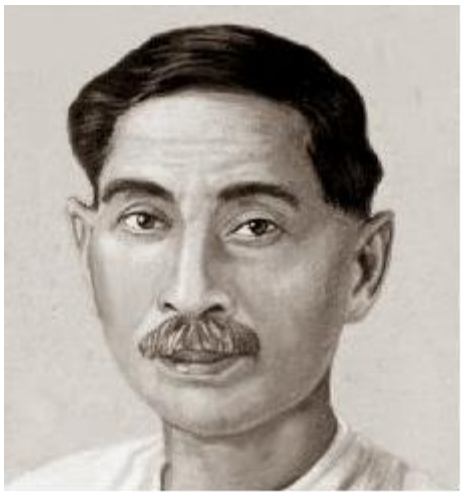

कथा सम्राट - मुंशी प्रेमचंद

कहानी कला को एक नवीन दृष्टि देने वाले तथा उपन्यास सम्राट जैसे एक विशिष्ठ पद पर आसीन श्री प्रेमचंद जी का जन्म सन1880 ई. जुलाई 31 को बनारस के पांच, छः मिल दूर लमही ग्राम में हुआ था। परिवार का मुख्य व्यवसाय कृषि था, जिससे पालन पोषण के लिए उपयुक्त आय नहीं हो पाती थी। अतः इनके पिता को विवश हो कर डाकखाने में बीस रुपये मासिक की क्लर्की करनी पड़ी। प्रेमचंद आठ वर्ष के ही थे कि उनकी माता आनन्दी देवी परलोक सिधार गई। प्रेमचंद जी के बचपन का नाम धनपत राय था। किंतु इनके चाचा इन्हें नवाब राय के नाम से पुकारते थे। जिस नाम से उन्होंने पहले उर्दू में साहित्य रचना की थी। घर की आर्थिक अवस्था स्वच्छ न होने पर भी उन्होंने अपनी पढ़ाई के ऊपर कभी इसका प्रभाव पड़ने नहीं दिया। आर्थिक संघर्ष से जूझते जूझते उन्होंने बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की।

पढ़ाई के साथ साथ प्रेमचंद जी के साहित्य के अध्ययन एवं प्रणयन की ओर आरम्भ से ही उनकी रुचि थी। उनकी पत्नी शिवरानी के कथनानुसार बचपन से ही उन्हें पढ़ने लिखने की रुचि थी। "तिलस्म होशरूबा" नामक बृहत तिलस्मी रचना को उन्होंने बड़ी रुचि से पढ़ा। यहीं से उनकी प्रतिभा साहित्य रचना की प्रेरणा ग्रहण कर सकी। सतरह वर्ष की अवस्था तक तो उन्होंने उर्दू के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ पढ़ डाले थे। सरशार द्वारा रचित "फसाने आजाद" तो उनको इतना रुचिकर हुआ कि आगे चलकर उन्होंने उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। निर्धन होते हुए भी वे परिश्रम एवं ईमानदारी से अर्थोपार्जित करके उपन्यास पढ़ते थे। ज्यों ज्यों आर्थिक कठनाइयाँ भीषण होती गई, उनका अध्ययन से प्रेम बढ़ता ही गया। उनका अध्ययन प्रेम इतना तीव्र हो उठा कि पुराणों के उर्दू अनुवाद भी उन्होंने पढ़ डाले। उनका जीवन पथ पथरीला एवं कंटकाकीर्ण था, उस पर चलते पैर लहूलुहान हो गए। किन्तु उन्होंने लक्ष्य की ओर बढ़ना नहीं छोड़ा। एक सशक्त संकल्प एवं भावुक हृदय लिए वे ऊबड़ खाबड़ जीवन पथ पर निरंतर बढ़ते चले गए।

प्रेमचंद ने कथा साहित्य को साहित्य सृजन का केंद्र बनाया। कथा साहित्य की ही प्रमुख विधा उपन्यास लेखन से उन्होंने अपने जीवन का समारंभ किया। सं 1901ई. में उन्होंने "प्रेमा" नामक एक उपन्यास उर्दू में लिखा। इसके बाद अन्य अनेक उपन्यास लिख डाले। सं 1904 ई. में उन्होंने कहानी रचना का कार्य भी प्रारंभ कर दिया। उस समय श्री रविन्द्र नाथ ठाकुर की कहानियां अत्यंत लोकप्रिय थी। इसीलिए प्रेमचंद ने उनके कहानियों के उर्दू अनुवाद कर डाले। सं. 1907 में उनकी प्रथम कहानी "संसार का अनमोल रत्न" उर्दू के प्रसिद्ध पत्र जमाना में प्रकाशित हुई। चार पांच कहानियों को लेकर अपनी प्रथम कहानी संग्रह "सोजेवतन" 1906 ई. में प्रकाशित कराया। इस संग्रह की समस्त कहानियों में राष्ट्रीयता मुखर थी। इसीलिए सरकार ने इसे जब्त करके सारी प्रतियाँ जलवा दी, जिसको प्रेमचंद ने नवाब राय नाम से लिखा था।

सोजेवतन के जब्त किए जाने पर इन्होंने प्रेमचंद के नाम से कहानी लिखना प्रारम्भ किया। 1901 ई. से 1915 ई. तक लगभग पौने दो सौ कहानियां लिख डाले। सोजेवतन, प्रेमपचीसी, प्रेमबतीसी, प्रेमचलिसा, खाके परवाना, फिरदौश-ऐ-खयाल और नजात उनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह है।

जैसे कि हम जानते हैं कि प्रेमचंद जी ने उपन्यास लेखन से अपने साहित्य जीवन की प्रारंभ किया था। उन्होंने श्री महावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा से "सेवासदन" नामक उपन्यास हिंदी में लिखा और तब से वे निरंतर हिंदी में लिखते चले गए। उनकी लोगप्रियता अनुदित बढ़ती चली गयी। इसके पश्च्यात उन्होंने रूठी रानी, कृष्णा, वरदान और प्रतिज्ञा आदि उपन्यास की रचना की। जो कि 1900 से 1906 के बीच की रचनाएं मानी गयी। सेवासदन उनकी तीसरी औपन्यासिक रचना है। जिसे गोरखपुर में 1916 ई. को प्रकाशित किया गया। प्रेमाश्रम की रचना सं 1918 में हुई, किंतु इसका प्रकाशन 1922 ई. में कोलकाता से हुआ। इस प्रकार निर्मला-1927, रंगभूमि-1925, कायाकल्प-1928, गबन-1930 ई. में प्रकाशित हुआ। कर्मभूमि ओर गोदान क्रमशः 1932 और 1936 ई में प्रकाशित हुए। उनका अंतिम उपन्यास मंगलसूत्र उनकी मृत्यु के कारण अपूर्ण रह गया। इस तरह प्रेमचन्द जी ने उपन्यास क्षेत्र में भी अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया था। जिसके कारण आज उन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाता है।

प्रज्जवलित स्वाभिमान से मंडित श्री प्रेमचन्द में संपादन कौशल का भी उन्मेष सजग था। उन्होंने समय समय पर जमाना, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी द्वारा प्रकाशित मर्यादा, माधुरी, जागरण, और हंस नामक पत्रों का संपादन दायित्व संभाला और उनमें साहित्य के उच्च आदर्शों को स्थान दिया। हंस का प्रकाशन उन्होंने 1930 ई. को किया जब वह रोग शय्या पर पड़े थे। हंस की जमानत के लिए उन्होंने पर्याप्त धन की व्यवस्था की। हंस बंद हो जाए ये उन्हें असहय था। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि हंस उन्हें कितना प्रिय था। हंस के खातिर उन्होंने फिल्म जगत में

प्रवेश किया। किन्तु उसमें उनको असफलता नहीं मिली।

इस प्रकार सन् 1936 ई. तक कथा साहित्य को न केवल समृद्धि दे कर वरन् उसे नवीन दृष्टि, दिशा विषय देकर शिल्प एवं नवीन शैली से परिवेष्टित कर इस कथा शिल्प सम्राट ने इस संसार से प्रयाण किया। साहित्य के अंतरिक्ष से एक दीप्त सितारा सदैव के लिए बुझ गया। लेकिन उनका आलोक आज भी उनकी रचनाओं में अंकुरित है। उनके इसी कृतित्व के कारण उनके बेटे अमृत राय ने उन्हें कलम की सिपाही कहकर अभिहित किया। जो कि सच में कलम की सिपाही बनकर पूरे साहित्य जगत को अपने लेख के माध्यम से सुरक्षित किया।

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

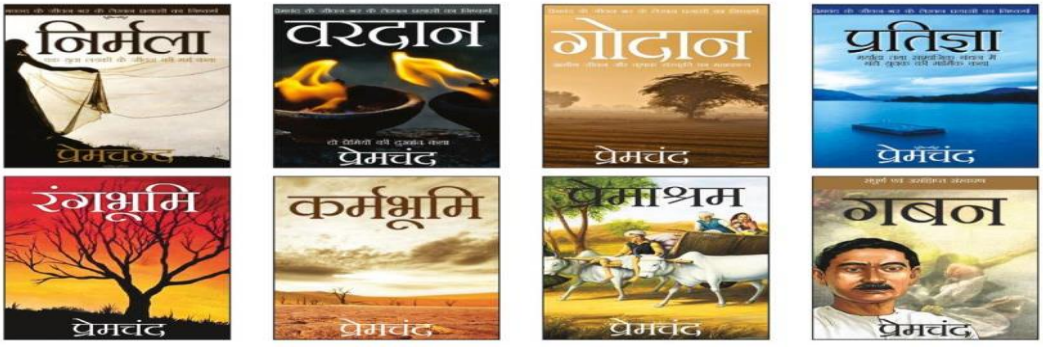

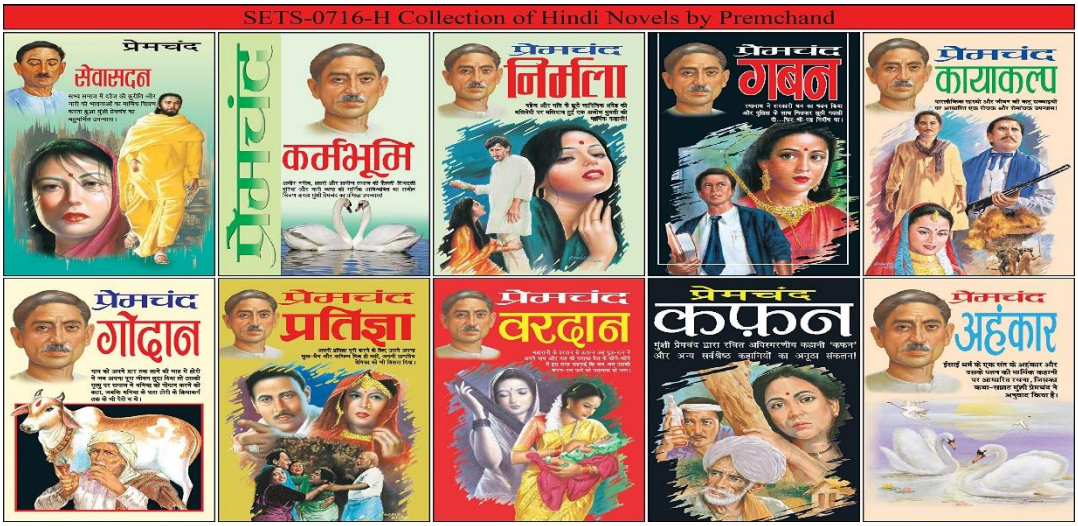

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुध्दिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पल्ले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता।

गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है। किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहे गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सडी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा।

उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दु:ख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्‌गुणों का इतना अनादर कहीं न देखा। कादचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।

देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्यों दुर्दशा हो रही है? क्यों अमेरिका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोडकर काम करते हैं, किसी से लडाई-झगडा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं, फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल समाने है। एक ही विजय ने उसे

संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया। लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अडियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है, अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाई जाति के थे- देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों से साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आसपास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे- विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाडी में जोत दिए जाते और गर्दन हिला-हिलाकर चलते उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज्याद-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गर्दन पर रहे। दिनभर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लेते। नाँद में खली-भूसा पड जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात है, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमे बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकडकर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकरते।

अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते- तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे

हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था, और काम ले लेते, हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथों क्यों बेच दिया?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिनभर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड गया, तो दोनों ने जोर मारकर पगहे तुडा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड सकेगा: पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रात: सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खडे हैं। दोनों ही गर्दनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड से भरे हैं और दोनों की ऑखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद्‌ हो गया। दौडकर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुम्बन का वह दृश्य बडा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लडके जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा- ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।

दूसरे ने समर्थन किया- इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।

तीसरा बोला- बैल नहीं हैं वे, उस जनम के आदमी हैं।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली- कैसे नमक-हराम बैल हैं कि एक दिन वहाँकाम न किया, भाग खडे हुए।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका- नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना न दिया होगा, तो क्या करते?

स्त्री ने रोब के साथ कहा- बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।

झूरी ने चिढाया- चारा मिलता तो क्यों भागते?

स्त्री चिढी- भागे इसलिए कि वे लोग तुम जैसे बुध्दुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगडकर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ? कहाँ से खली और चोकर मिलता है, सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खाएँ चाहे मरें।

वही हुआ। मजूर को बडी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट, न कोई रस। क्याखाएँ? आशा भरी ऑंखों से द्वार की ओर ताकने लगे।

झूरी ने मजूर से कहा- थोडी-सी खली क्यों नहीं डाल देता बे?

'मालिकन मुझे मार ही डालेंगी।

'चुराकर डाल आ।

'ना दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी कहोगे।

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाडी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाडी को सडक की खाई में गिराना चाहा, पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज्यादा

सहनशील था।

संध्या समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मजा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छडी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उडने लगते थे। यहाँ मार पडी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा!

नाँद की तरफ ऑखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया, पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डण्डे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बडी-बडी रस्सियाँ न होती तो दोनों पकडाई में न आते।

हीरा ने मूक भाषा में कहा- भागना व्यर्थ है।

मोती ने उत्तर दिया- तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।

'अबकी बडी मार पडेगी।

'पडने दो, बैल का जन्म लिया है तो मार से कहाँ तक बचेंगे।

'गया दो आदमियों के साथ दौडा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।

मोती बोला- कहो तो दिखा दूँ कुछ मजा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया- नहीं भाई! खडे हो जाओ।

'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा।

'नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकडकर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पडता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खडे रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लडकी दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई।

उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का बास है। लडकी भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

दोनों दिनभर जोते जाते, डण्डे खाते, अडते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की ऑखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता हीरा!

'क्या करना चाहते हो?

'एकाध को सीगों पर उठाकर फेंक दूँगा।

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लडकी, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लडकी है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?

'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लडकी को मारती है।

'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।

'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुडाकर भाग चलें।

'हाँ, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?

'इसका उपाय है। पहले रस्सी को थोडा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही बालिका निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खडी हो गईं।

उसने उनके माथे सहलाए और बोली- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाएँ।

उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खडे रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा- अब चलते क्यों नहीं?

हीरा ने कहा- चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे।

सहसा बालिका चिल्लाई- दोनों फूफा वाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौडो।

गया हडबडाकर भीतर से निकला और बैलों को पकडने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौडते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खडे होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए?

हीरा ने कहा- मालूम होता है, राह भूल गए।

'तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।

'उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोडें?

अहिंसक समाज के लिए शिक्षा

- मंजु रानी सिंह

आज जबकि एक अहिंसक और मंगलमय समाज के अंग बनकर हम सृजन के गीत गा रहे होते तब हमारी विडम्बना यह है किरोज-ब-रोज हिंसक और विध्वंसकारी हो जा रहे हमारे समाज की चिंता लिए तरह-तरह के चिंतन तथा सहकारी प्रयोग में लगे हुए हैं | आदमी को सर्वोपरि जीव होने का श्रेय निश्चय ही उसकी सृजनशीलता त्याग की समता और उसके सद्भावी विअस को ही दिया जा सकता है | गुरुदेव की अभिव्यक्ति का सहारा लिया जाय तो –

"आपन होते बहिर होए
बाहिर द्वारा बुकर माझे विश्वलोकर
पाबी सारा"

अर्थात खुद से बाहर निकल कर याकि अपने स्वार्थ से बाहर निकल कर यदि खड़े होओगे तो अपने ह्रदय में समस्त विश्व की आवाज (तुम्हारी और आती हुई तुम्हारे पुकार का उत्तर देती हुई सुनाई पड़ेगी) | आधुनिक मनुष्य की शिक्षा की उम्र हज़ार सालों से ऊपर ही होगी, आधुनिकता की भी पर परिणाम सृजन की जगह विध्वंश, अहिंसा और शांति की जगह हिंशा और अशांति- हाहाकार क्यूँ ?, यही तो चिंता और यही है चिंता का विषय |

कुंवर नारायण की एक कविता शांति वार्ता सुनिए और सोचिए –

अल्लाहो अकबर
विनती है भगवान
अगर दो तो अणुबम
न ये गन न वो गन
ब्रह्मास्त्र दानम
राकेट महानम
महाशुन्य खड्डम्
समझ गड्ड-मड्डम
लड़ाकू विमानम्

न अन्नम् न वस्त्रम्
करें- शास्त्र चर्चा
मगर होड़ शास्त्रम्
हलाहल पचाये
मगर मुंह पे रवीसम्
करें- शांति वार्ता
मगर दांत पीसम्
पुराणम् कुरानम्
सभी को प्रणामम्
न साखी न सब्दम्
महायुद्ध सनम्

ईसा न इस्लाम
मार्क्सम न बुद्धम्
न मजहब न धम्मम्
परम सत्य मुद्धम्

परमाणु बम बम
तुम तुम न हम हम
मिटाने औ, मिटने में
न पश्चिम न पुर्वम्
नकारम् भविष्यम्
विस्फोट सफलम्
निराकार विश्वम्

(प्रतिनिधि कविताएँ, पृष्ठ. 223-224)

शिक्षा, सभ्यता, तकनीकी विकास और आधुनिकता की परिणति में आखिर यह विध्वंशकारी, विस्फोटक, नकारात्मक उर्जा से आविष्ट दुनिया क्यों प्रतिनिधित्व कर रही है हमारा, यही तो विचारणीय विषय है आज और सर्वाधिक महत्वपूर्ण |

महान दार्शनिक और शिक्षाविद् महात्मा भगवानदीन ने अपनी पुस्तक 'बालक अपनी प्रयोगशाला में' अपना चिंतन प्रस्तुत करते हुए एक महत्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान दिलाया है | उनका मानना है कि

'लड़के-लड़कियों' को इतनी सूझ-बूझवाला होना होगा, इतना मिलनसार बनना पड़ेगा कि विज्ञान हमारे ऊपर सवार न होकर, हमारी सवारी में रहे और हमारा नाश करने की जगह हमारी बढवारी में लगे | इसलिए हमे इस वक्त इस काम में जुटना है कि हमारे बच्चे धर्म पारायण बनें | सारी दुनिया के लोग एक समाज के सदस्य बनें और विज्ञान को धर्म का रूप देकर ही चैन से बैठने की सोचें | अगर हम इस काम में सफल हुए तो फिर हमे यह चिंता करने की जरुरत नहीं कि हमारे लड़के लड़कियों का भविष्य क्या होगा ; क्योंकि वे इस काबिल बन गए होंगे कि उन्हें उन सब चीज़ों पर, उन सब साधनों पर, फिर चाहे वो प्राकृतिक हों या मानवकृत हों, पूरा-पूरा अधिकार होगा, यानी वे सारे मानव समाज के होंगे और फिर उनका ऐसा उपयोग तो हो ही नहीं सकेगा कि मानव समाज को पतन की और ले जा सकें | बढ़वारी में देर लग सकती है, पर बढ़वारी लाज़मी होगी |

"सबसे ज्यादा जरुरी यह समझना है कि हमारे लड़के और लडकियां विज्ञान के लिए नहीं है, बल्कि विज्ञान उनके लिए है | अगर विज्ञान ऐसा नहीं करता, जिससे मानव-समाज का भला हो, तो वह विज्ञान नहीं 'कुज्ञान' है |" (वही, पृष्ठ.72)

विज्ञान का आदमी ने इतना ही दुरूपयोग किया कि वह अधिकांश स्तर पर 'कुज्ञान' ही साबित हो जाता है| आज सबसे ज्यादा माएँ चिंतित हैं, दुखी हैं और चकित भी हैं-

जनम से जिन पूतों को वह
मीठे दूध पिलाती है
उनके दंत विषैले कैसे?
सोच-सोच वो रोती है |
इतनी नकारात्मक परिणति के लिए वह हियार नहीं-
जिस दुनिया को वह रचती है
अपनी सांसो की डोरी पर
उस दुनिया को कोई मिटा दे
बारूद की ढ़ेर पर रखकर
नाश का ऐसा खूनी सपना
नहीं देखती माँ

प्यार के दाने अंगना डाले
चिड़िया चुगाती माँ |

सर्वेक्षण से पपात चलता है कि पांच हज़ार से भी ज्यादा ग्रन्थ प्रति सप्ताह छप जाते हैं | पांच हजार ग्रन्थ प्रति सप्ताह का अर्थ हुआ कि विद्यार्थियों की भी संख्या बढ़ती जा रही है पर दुनिया तो नीचे पतित होती चली जा रही है |... वहाँ तो युद्ध घातक से घातक हुए चले जा रहे हैं, घृणा का विस्तार हुआ जा रहा हैं, इर्ष्या और जलन भी तीव्रता के परिणाम साबित करते हैं कि बुनियाद में ही कोई खराबी है और इसकी जिम्मेदारी शिक्षक और शिक्षार्थी पर ही आती है, यह अलग बात है कि दोनों ही दोष सिस्टम पर देंगे, व्यवस्था, प्रशासन आदि पर ही देंगे |

ओशो अपने चिंतन के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा में कोई बुनियादी क्रांति हुए बिना मनुष्य की संस्कृति में कोई क्रांति हो सकती है ? नहीं हो सकती क्योंकि –शिक्षा आपके मस्तिष्क के ढांचे को निर्धारित कर देती है फिर उस ढाचे से छूटना करीब करीब कठिन और असंभव हो जाता है| पन्द्रह या बीस साल एक युवक शिक्षा लेगा ; पन्द्रह बीस साल में उसके मस्तिष्क का ढांचा निर्मित हो जायेगा, फिर जीवन भी उस ढांचे से छूटना बहुत कठिन है|

इस ढाचे से जो मनुष्य पैदा हो रहा है वह विकृत है इसका अर्थ यही हुआ न कि ढ़ांचा गलत है? यह क्यों न हो गलत , यह जिस केंद्र पर घूम रहा है वह है एम्बिशन | हमारी सारी शिक्षा एम्बिशन के केंद्र, महत्वाकांक्षा के केंद्र पर घूम रही है जो इसे दौड़ सिखाती है| हमें सिखायी जाती है कि आगे हो जाओ | एक छोटे से बच्चे को प्रथम होने की एंजायटी देती है यह शिक्षा बच्चे के दिमाग में भर जाता है यह भाव कि प्रथम आने पर वह पुरस्कृत होगा, द्वितीय आने पर अपमानित | इस तरह की प्रतियोगिता एक प्रकार का बुखार है , अहंकार जग जाता है और जिन्दगी भर कायम रहता है | पद और पैसा की प्रतियोगिता में दौड़ता चलता है आदमी और अंततः कहाँ पहुंचता है ? वहां जहां से और कोई उससे आगे है | सच तो यह है कि दुनिया में कोई भी आदमी आगे नहीं आ पाया फिर भी वह अपने बच्चों को आगे – आगे होने का जीवन दर्शन ही देता है |

ओशो कहते हैं – कि सारी शिक्षा ईर्ष्या पर खड़ी है |

एक बच्चे को दिखाकर हम दूसरे बच्चे से कहते हैं – देखो ! यह कितना बुद्धिमान है और तुम कितने बुद्धिहीन | इस जैसे बनों | हम ईर्ष्या जगा रहे हैं | हम उसके भीतर जलन पैदा कर रहें हैं | इस तरह बच्चे के भीतर जहर डालने वाली शिक्षा जारी है |

"एम्बिशन" और उसके केंद्र पर घूमती हुई शिक्षा गलत है और अगर हमें नई दुनिया के लिए केंद्र बदलना होगा |

ओशो के अनुसार शिक्षा का केंद्र प्रेम होना चाहिए |

सच तो यह है कि- सिखने का सूत्र ही है विनम्रता ह्युमिलिटी|

कुछ भी सीखने के लिए अप्रतियोगी नानएम्बिशन माइंड चाहिए | इसके लिए विनम्रता स्वयं ही आ जाती है |

इर्ष्या और जलन ने दो महायुद्ध करवाए दस हजार लोगों से भी अधिक हत्या हुई |

'अगर विश्वविद्यलय सच्चे हैं , अगर शिक्षा वास्तविक है तो दुनिया से लड़ाई विलीन हो जानी चाहिए|'

-ओशो

अगर शिक्षा सही होगी तो पराजित के प्रति दया और सम्मान उमडेगा | किसी को हराने में हिंसा है | किसी को हराने में घृणा है | किसी को हराने की चेष्टा किसी विकृत मन क ही परिणाम हो सकता है, बीमार मन का |

अगर सही शिक्षा ही सम्यक शिक्षा हो तो कम के अनुसार पद और प्रतिष्ठा नहीं जुड़ेगी | एक आदमी जूते सीता है, एक आदमी रोटी बनाता है, एक आदमी मकान राजमिस्त्री है, ईंटें बनाता है | इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है | ये सारे लोग जिन्दगी को मिलजुलकर बना रहें हैं | जिन्दगी में सब जरूरी है | इसमे ईंटें बनाने वाले सड़क साफ करने वाले लोग जरूरी हैं, इस मुल्क पर हुकूमत करने वाले भी जरूरी हैं, यहाँ कोई किसी से कम नहीं, किसी का ओहदा किसी कम नहीं | किसी का कोई स्टेटस नहीं है | सरे लोग मिलकर एक सहयोगी जिन्दगी को पैदा कर रहे हैं | जिन्दगी एक सहयोगी है , एक को-आपरेशन है | इस तरह जिस दिन हम कामों की तलाश को समग्र जीवन के प्रति उसके सहयोग और दान के भाव को देखकर स्वीकार कर लेगें, जिस दिन हमारी शिक्षा कामों से पदों को प्रतिष्ठाओं को नहीं जोड़ेगी एक

संगीतज्ञ का जो मूल्य है, जूते सीने वाले का भी उतना ही मूल्य है, कपसे सीने वाले का भी उतना ही मूल्य है | सवाल यह नहीं है कि – कौन क्या करता है ? सवाल यह है कि – कौन, कैसे – कैसे क्या करता है |

इस तरह की सहयोगी समरसता उत्पन्न करनेवाली शिक्षा ही सच्चे मनुष्य का निर्माण करती है , उसी की आत्मा से यह गीत निकल सकता है –

वैष्णव - जन तो तेन कहिए
जे पीर पराइ जाणे रे|
पर दुखे उपकार करे ते ये
मन अभिमान न आणे रे ||

प्रोफ़ेसर, हिंदी-विभाग, विश्वभारती

शान्तिनिकेतन, बोलपुर, पश्चिम बंगाल

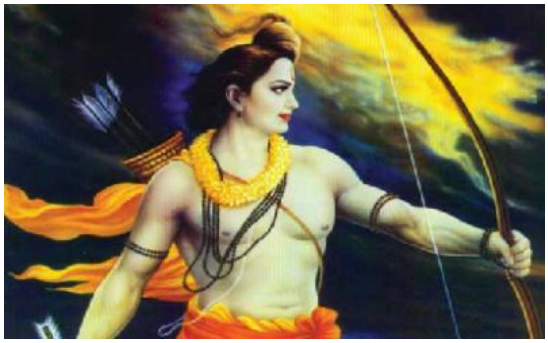

हिंदी साहित्य में राम काव्य परंपरा

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागों में बांटा गया है। आदिकाल, रीतिकाल, और आधुनिक काल। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्तिकाल को पुनः दो वर्गों में बांटा है - निर्गुण भक्ति एवं सगुण भक्ति। सगुण भक्ति को पुनः दो वर्गों में बांटा गया है- रामकाव्य और कृष्णकाव्य। हिंदी साहित्य में भक्तिकाल का समय 1375ई. से 1700ई. तक माना जाता है। आचार्य श्यामसुंदर दास ने इसे स्वर्ण काल कहा है। दक्षिण में अलवार नाम से कई प्रख्यात भक्त हुए हैं। इन आचार्यों में रामानुजाचार्य प्रमुख थे। उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊँच-नीच का भेद तोड़ दिया। रामानंद ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया। उनके राम परमब्रह्म स्वरूप है। उनमें शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय है। वे मर्यादा पुरुषोत्तम और लोकरक्षक हैं। रामभक्त कवियों के काव्य में सेवक-सेव्य भाव है। वे दास्य भाव से राम की आराधना करते है। वे ज्ञान मार्ग को कठिन तथा भक्ति मार्ग को सहज, सरल स्वीकारते हैं।

रामभक्ति काव्य:-

प्रागैतिहासिक युग से लेकर आधुनिक युग तक मर्यादापुरुषोत्तम रामचंद्र के शील, शक्ति, एवं सौंदर्य से मंडित अलौकिक व्यक्तित्व के विविध रूपों ने जनमानस को आकृष्ट किया है। रामकाव्य परम्परा के उद्‌भव और विकास का अनुशीलन करने वाले विद्‌वानों के मतानुसार राम उत्तरवैदिक काल के दिव्य महापुरुष हैं। वेदों में कुछ स्थलों पर 'राम' शब्द का प्रयोग अवश्य हुआ है, किन्तु उसका अर्थ दशरथ पुत्र राम नहीं, अपितु अन्यान्य व्यक्तियों से है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर 'वाल्मीकि रामायण' को आदिकाव्य मान कर रामकथा का मूल स्रोत स्वीकार किया जाता है। इस आदिकाव्य में राम का चित्रण उदात्त और असाधारण गुणों से सम्पन्न दिव्य

महापुरुष के रूप में हुआ है। अध्यात्मरामायण, आनंदरामायण, अदभुत रामायण, हनुमानसंहिता, राघवोल्लास आदि ग्रंथों में भी रामकथा की धार्मिक एवं दार्शनिक व्यख्या प्रस्तुत की गयी है। विष्णुपुराण, वायुपुराण, भागवतपुराण और कूर्मपुराण में रामकथा सर्वाधिक वैविध्य-सम्पन्न है। वराह, अग्नि, लिंग, वामन, ब्रह्म, गरूड़, स्कन्द आदि पुराणों में भी रामकथा के अनेक प्रसंग दृष्टिगत होते हैं। इनमे परंब्रह्म स्वरूप में राम की प्रतिष्ठा हुई है।

★ बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में रामकथा:-

संस्कृत-ग्रंथों के साथ साथ रामकथा बौद्ध एवं जैन-ग्रंथों में भी मिलती है। बौद्ध एवं जैन ग्रंथों का उद्देश्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम के औदात्त को अभिव्यक्त करने की अपेक्षा अपने अपने धर्मों की सैद्धान्तिक मान्यताओं के अनुकूल रामकथा को नयी भावभूमि प्रदान करना है। बौद्ध जातक की कथाओं में रामकथा 'दशरथजातक', 'अनामर्कजातक' उपलब्ध होती है।

बौद्ध-ग्रंथों की अपेक्षा जैन-ग्रंथों में रामकथा का वर्णन अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक हुआ है। विमलसूरी-रचित 'पउमचरियम' भाव एवं शैली दोनों दृष्टियों से अत्यंत परिष्कृत रचना है। रामकथा के उद्भव और विकास के संदर्भ में ही नहीं, समसामयिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अध्ययन एवं भाषा शास्त्रीय अनुशीलन की दृष्टि से भी इसका महत्व है। जैन ग्रंथों की इस परंपरा में भुवनतंगसूरी-प्रणीत 'सियाचरीयम' तथा 'रामचरीयम' उल्लेख है। इनमें राम को सर्वत्र परंब्रह्म के रूप में ग्रहण न कर, उनका चित्रण असाधारण शक्तियों से संपन्न महापुरुष के रूप में ही हुआ है।

इन ग्रंथों में राम के वनगमन और पुत्रवियोग से राजा दशरथ की मृत्यु का वर्णन नहीं है, अपितु उनके द्वारा जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण कर सन्यास ग्रहण कर लेने का वर्णन मिलता है। स्वयंभू प्रणीत 'पउमचरिउ' में राम की माता का नाम 'अपराजिता' और राम के एक ही विवाह का वर्णन किया है एवं पुष्पदंत रचित 'महापुराण' में राम की माता का नाम 'सुबला' था, और राम के आठ विवाह हुए थे।

★ दक्षिण के आलवारों में रामकथा:-

वैष्णव भक्ति के इस विकासक्रम में रामभक्ति सर्वप्रथम दक्षिण के आलवार संतो की वाणी के माध्यम से प्रस्फुटित हुई और उत्तरी भारत में उसका विकास हुआ। ये आलवार संख्या में बारह थे। इनमें से काठकोप नकम्मालवार राम की पादुका के अवतार माने जाते हैं। सर्वप्रथम इनकी रचना 'तिरुवायमोली' में अनन्य रामभक्ति का वर्णन मिलता है। अन्य तीन प्रसिद्ध

रचनाएँ- "तिरुविरुत्तम", "तिरुवर्गशरियेम" तथा "पेरियतिरुवंददी"। श्रीसम्प्रदाय के प्रथम आचार्य श्री रंगनाथ मुनि ने आलवार संतों के लोकप्रचलित पदों को 'प्रम्बन्धम' शीर्षक से चार भागों में संकलित किया। आचार्य रामानुज का स्थान इस आचार्यपरंपरा में अप्रतिम है। ब्रह्म सम्प्रदाय की भक्ति परंपरा में मध्वाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। धनुषबाणधारि राम के लोकरक्षक रूप की उपासना प्रारम्भ कर उन्होंने एक और हिन्दू समाज की पराजित मनोवृति को उद्भव किया और दूसरी ओर बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये हिंदुओं रामतारक मंत्र दे कर पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित करने की नयी व्यवस्था भी स्थापित की। भक्ति भावना को ऊँच-नीच एवं बाह्य आडम्बरों से मुक्त करने का श्रेय भी आचार्य रामानन्द को ही प्राप्त है। इनकी शिष्य-परंपरा में निर्गुणोपासक एवं सगुणोपासक दोनों ही थे।

★ संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में रामकथा:-

संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश में रामकाव्य की सुदीर्घ परम्परा वैविध्य-संपन्न प्रबंधकाव्यों, उद्देश्यप्राधान नाटकों एवं भावसम्बलित गीतिकाव्यों के रूप में अभिलक्षित होती है। संस्कृत नाटकों में सर्वप्रथम स्थान भास-रचित 'प्रतिमा' एवं 'अभिषेक' नाटकों का है। 'प्रतिमा' नाटक में राम के वनगमन से ले कर रावणवध तक कि कथा है और 'अभिषेक' नाटक में बालिवध से ले कर राम के राज्याभिषेक तक की घटना वर्णित है। आठवीं शताब्दी में भवभूति-प्रणीत 'महावीरचरित' और 'उत्तररामचरित' नाटकों में से 'महावीरचरित' में विवाह से ले कर राम के राज्याभिषेक तक की कथा सात अंकों में विभाजित है। अनंग हर्ष मातृराज द्वारा रचित 'उदात्तराघव' नाटक के छह अंकों में वनवास से ले कर अयोध्या वापस आने तक कि रामकथा का नाटकीय विस्तार दृष्टिगत होता है। उपर्युक्त प्रमुख रामकाव्यों के अतिरिक्त साक-ल्यमल रचित 'उदार राघव', वामन भट्टणवाण रचित 'रघुनाथचरित', चक्र कवि-कृत 'जानकीपरिणय' और अद्वेत कवि द्वारा रचित 'राघवोल्लास' प्रमुख महाकाव्य हैं।

★ आधुनिक भारतीय भाषाओं में रामकाव्य:-

हिंदी के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी मर्यादापुरुषोत्तम राम के जीवन प्रसंगों को ले कर विविध काव्यों की रचना हुई है। बंगला भाषा में कृतिवास-कृत 'रामायण', तमिल के महाकवि कम्ब की 'कम्ब रामायण' तथा तेलुगू की 'रंग-रामायण' एवं 'भास्कर रामायण' ने प्रत्यक्ष्य अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पर्याप्त सीमा तक हिंदी रामकाव्य-परंपरा

को भी प्रभावित किया है। कृतिवास रामायण पर समसामयिक शैव एवं शाक्त सम्प्रदायों का प्रभाव भी लक्षित किया जा सकता है।

★ हिंदी रामकाव्य:-

हिंदी साहित्य का आदिकाल समसामयिक राजनीति एवं सामाजिक वातावरण की दृष्टि से रामकाव्य की रचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त काल था। इस युग में कविगण मर्यादापुरुषोत्तम राम की शौर्य शक्ति से समन्वित लीलाओं का गान करके बाह्य शक्तियों के आक्रमणों के विरुद्ध राष्ट्र की सोयी हुई ऊर्जा को उद्‌बुद्ध कर सकते थे। इस युग की कृतियों में मंगलाचरण अथवा स्तुति के रूप में कहीं-कहीं रामकथा के कुछ प्रसंग दृष्टिगत हो जाते हैं। 'पृथ्वीराज रासो' में दशावतार वर्णन वस्तुतः मंगलाचरण के रूप में ही है। इस प्रसंग के अन्तर्गत कवि ने मुक्ति प्रदान करने वाले परंब्रह्म के विविध अवतारों का वर्णन किया है। रामावतार से संबंध अड़तालीस छन्दों में परशुराम द्‌वारा क्षत्रियों के संहार, राजा दशरथ के घर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म, राम वनगमन, राम-रावण-युद्‌ध, सीता-उद्‌धार आदि रामकथा के प्रमुख प्रसंग वर्णित हैं। भक्तिकाल का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण भी राम के लोकरक्षक रूप की अभिव्यक्ति के सर्वाधिक अनुकूल था। तुलसीदास से पूर्व के रामभक्त कवियों में विष्णुदास का नाम उल्लेख है। नागरीप्रचारिणी सभा की विभिन्न खोज-रिपोर्ट में इनके द्‌वारा रचित पांच ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। महाभारतकथा, रुक्मणीमंगल, स्वर्गारोहण, और स्नेहलीला। हिंदी की रामकाव्य-परंपरा का विकास यदि स्वामी रामानंद से स्वीकार किया जाये तो कोई अनौचित्य नहीं होगा।

● गोस्वामी तुलसीदास:-

गोस्वामी तुलसीदास के जीवनवृत्त के बारे में अंत:साक्ष्य एवं बहिर्साक्ष्य के आधार पर विद्‌वानों ने विविध मत प्रस्तुत किये हैं। बेनीमाधवदास-प्रणीत 'मूल गोसाईं-चरित' तथा महात्मा रघुबरदास-रचित 'तुलसिचारित' में गोस्वामी जी का जन्म संवत् 1554 दिया हुआ है। 'शिवसिंहसरोज' में इनका जन्म संवत् 1583 स्वीकार किया गया है। अंत:साक्ष्य के आधार पर भी इनकी जन्मतिथि सं. 1589 अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। 'मूल गोसाईचारित' और 'तुलसीचारित' में इनका जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। शिवसिंह सेंगर भी राजापुर को गोस्वामी जी का जन्मस्थान मानते हैं। जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी जी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। मिश्रबन्धुओं ने इन्हें कान्यकुब्ज माना है। गोस्वामी जी का बाल्यकाल अत्यंत विषम परिस्थितियों में व्यतीत हुआ था। माता-पिता के

द्वारा छोड़ दिये जाने पर बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया और ज्ञान-भक्ति की शिक्षा-दीक्षा भी दी। गोस्वामी जी का विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। अत्यधिक आसक्ति के कारण जब एक बार इन्हें अपनी पत्नी से मधुर भर्त्सना "लाज न आई आपको दौरे आएहुं साथ" मिली तब इनकी भावधार सहसा लौकिक विषयों से विमुख हो कर पभु-प्रेम की ओर उन्मुख हो गयी।

आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में इनके छोटे-बड़े बारह ग्रंथों का उल्लेख किया। दोहावली, कवित्त रामायण, गीतावली, रामचरितमानस और विनयपत्रिका बड़े ग्रंथ है तथा पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, बरवैरामायण और कृष्णगीतावली छोटे ग्रंथ हैं। 'शिवसिहंसरोज' में दस और ग्रंथों के नाम भी गिनाये गये हैं- 'रामसतसई', 'रामशलाका', 'छंदावली', 'छप्पयरामायण', 'रोलारामायण', 'कुंडलीरामायण', 'कड़खारामायण', 'संकटमोचन', 'हनुमदबाहुक', 'झूलनारामायण'। रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने प्रस्तुत कर विश्रृंखलित हिंदू समाज को केंद्रित किया। गोस्वामी जी की यह भक्तिभावना मूलतः लोकसंग्रह की भावना से अभिप्रेरित है। उस समय गोस्वामी जी ने मर्यादापुरुषोत्तम राम के शील, शक्ति और सौंदर्य से संबलित अदभुत रूप का गुणगान करते हुए लोकमंगल की साधनावस्था के पथ को प्रशस्त किया। तुलसी का समन्वयवाद उनकी भक्तिभावना में भी दिखायी देता है। 'रामचरितमानस' में उन्होंने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त अंकित करके वैष्णव एवं शैव संप्रदायों को एक ही सामान्य भावभूमि प्रदान की है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य ले कर आया हो"।

लिज़ा मिश्र, +3 तृतीय वर्ष

कुछ समय के पश्चात जज़ साहेब अपना फैसला सुनाने वाले हैं। सभी लोग चुपचाप न्याय के इंतजार में अदालत में बैठे हुए थे। सागर चुपचाप अपना सर झुकाए अदालत में खड़ा था। हर बार वो यही कहता रहा कि वो निर्दोष है, उसने कुछ नहीं किया है। आखिर एक रक्षक, भक्षक कैसे बन सकता है? मगर पूरी अदालत में कोई उसकी बात नहीं सुन रहा था। सब लोग उसके खिलाफ थे, उसे दोषी मान रहे थे। वो चीख चीख़ के थक चुका था। उसकी उम्मीद टूट चुकी थी। वो मन ही मन यही सोच रहा था कि शायद उसने गलती की थी किसकी जान बचाकर। मानवता की दृष्टि से उसने जिस बच्ची की जान बचायी थी, उसी बच्ची के कारण पूरा समाज आज उसे घृणा की दृष्टि से देख रहा है। शायद आज उसका अंतिम दिन हो!!

सागर एक 27 वर्ष का अनाथ लड़का है। बचपन में माँ को फिर जवानी में अपने पिता को खोया। उसके आगे पीछे कोई न था। अनाथ होने के कारण रिश्तेदारों ने भी उससे मुँह मोड़ लिया। पिता की दी हुई शिक्षा की वजह से उसे एक गैर सरकारी नौकरी मिल जाती है। रोज सुबह 9 बजे जाता और रात 8 बजे लौटता। वो जिस रास्ते से आता जाता था वह सुनसान रास्ता था। मुश्किल से दो चार लोग आते जाते होंगे।

हर दिन की तरह उस दिन भी सागर अपने कार्यालय से 8 बजे लौट रहा था। उसकी गाड़ी की लाइट रास्ते पर किसी चीज़ पर पड़ी। गाड़ी रोक कर उसने देखा कि एक लड़की बीच सड़क पर बेहोशी की हालत में पड़ी थी। उसने एक फ्रॉक पहनी थी जो खून से भीग गया था। सागर को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे, इसीलिए वो पहले उस लड़की को सरकारी

अस्पताल में लेकर गया। डॉक्टर लड़की को देखकर फ़ौरन ही समझ गया कि लड़की के साथ बलात्कार हुआ है। डॉक्टर ने पुलिस को बुलाया। पुलिस ने अस्पताल में पहुँचकर सागर से पूछताछ आरम्भ किया। फिर सागर को अपने साथ पुलिस स्टेशन ले गए और उससे ना जाने कितने सवाल जवाब किये। एक ही सवाल को बार बार पूछते गए। सागर बिचारा भूखा था, उसने दोपहर से कुछ न खाया था। अब तक रात के 10 बज चुके थे। भूख के मारे वो कुछ न समझ नहीं पा रहा था और पुलिस के सवालों का उल्टा सीधा जवाब देने लगा। जिससे पुलिस का शक उस पर गहरा होता गया। उधर लड़की की हालत और भी गंभीर हो चली थी, उसके माता पिता खबर पाकर उसके पास पहुँच चुके थे।

इसी बीच 24 घंटे बीत चुके थे। पुलिस ने सागर को दोषी समझकर उसे अदालत में पेश किया था। सागर की सहायता करने वाला कोई न था और न ही उसके पास इतना धन था कि वो अपने लिए एक वकील को कर सके। अतः वो चुपचाप निःसहाय एक मुजरिम की तरह अदालत में खड़ा रहा।

दोषी न होते हुए भी सरकारी वकील ने उसे दोषी साबित कर दिया था। और कुछ बाकी नहीं था। जज़ साहिब अपना फैसला सुनाने ही वाले थे कि दरोगा जी एक लड़के और एक वीडियो रिकॉर्डर के साथ आये। जिसमें उस लड़की ने अपने असली मुजरिम का नाम लिया था और वो मुजरिम कोई और नहीं बल्कि दरोगा के साथ आया वो लड़का था, जो उस लड़की के घर के पास रहता था। जो सच में उस लड़की का और इस समाज का दोषी था।

इन जैसे लोगों के कारण आज समाज दूषित है। रिश्तों में कलंक है। जिनके कारण आज समाज में एक नारी सुरक्षित नहीं है। इंसानियत पर से भरोसा उठ गया है। अपनी भोली सूरत दिखाकर ये लोगों को ठगते हैं। और बदनाम मानवता को करते हैं। अच्छे लोग दोषी होते और दोषी रिहा।

पिंकी सिंह, +3 तृतीय वर्ष

भारतीय संगीत कला

भारतीय संगीत प्राचीन काल से सुना और विकसित होता संगीत है। इस संगीत का प्रारंभ वैदिक काल से भी पूर्व का है। इस संगीत का मूल स्रोत वेदों को माना जाता है। हिन्दू परम्परा में ऐसा मानना है कि ब्रह्मा ने नारद मुनि को संगीत वरदान में दिया था ।

पंडित शारंग देव कृत, "संगीत रत्नाकर" ग्रंथ भारतीय संगीत को परिभाषा "गीतम्, वाद्यम् तथा नृत्यम् प्रथम संगीत मुच्यते" कहा गया है। गायन, वादन, एवं नृत्य तीनों कलाओं का समावेश संगीत शब्द में माना गया है। तीन स्वतंत्र कला होते हुए भी एक दूसरे की पूरक हैं। भारतीय संगीत दो प्रकार में प्रचलित है -
प्रथम कर्नाटक संगीत, जो दक्षिण भारतीय राज्य में प्रचलित है और दूसरा हिंदुस्तानी संगीत शेष भारत में लोकप्रिय हैं। भारतवर्ष की सारी सभ्यता में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। धार्मिक एवं सामाजिक परंपरा में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रह है। इस रूप में, संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है। वैदिक काल में आध्यत्मिक संगीत को मार्ग तथा लोक संगीत को देशी कहा जाता था। कालांतर में यही शास्त्रीय ओर लोक संगीत के रूप में दिखता है।

वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों का उच्चारण गायन के साथ होता था। सामवेद का गायन सातों स्वर के प्रयोग के साथ किया जाता था। गुरु शिष्य परंपरा के अनुसार, शिष्य को गुरु से वेदों का ज्ञान मौखिक ही प्राप्त होता था। उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की

संभावना से मनाही थी। इस तरह प्राचीन समय में वेदों में संगीत का कोई लिखित रूप न होने के कारण उसका मूल स्वरूप लुप्त होता गया।

भारतीय संगीत में सात शुद्ध स्वर

सा, रे, ग, म, प, ध, नी

शुद्ध स्वर से ऊपर या नीचे विकृत स्वर आते हैं। 'सा' और 'प ' के विकृत स्वर नहीं होते हैं। रे', 'ग', 'ध' और 'नि' के विकृत स्वर नीचे होते हैं। 'म' का विकृत स्वर ऊपर होता है और उसे तीव्र कहा जाता है। समकालीन भारतीय शास्त्रीय संगीत में ज्यादातर इसी तरह स्वर गाये जाते हैं। पुरातन काल से ही भारतीय स्वर सप्तक प्रसिद्ध हैं। महर्षी भरत ने इसी के आधार पर २२ स्रुतियों का प्रतिपादन किया था जो केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत की ही विशेषता है।

राग परिचय

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में समयानुसार गायन प्रस्तुत करने की पद्धति हैं। उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में रागों के गायन - वादन के विषय में समय का सिद्धांत प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जिसे हमारे प्राचीन पंडितों ने दो भाग में विभक्त किया था। प्रथम भाग दिन के बारह बजे से रात्रि के बाहर बजे तक और दूसरा भाग रात्रि बारह बजे से दिन के बारह बजे तक माना गया है। इस के प्रथम भाग को पूर्व भाग और दूसरे को उत्तर भाग कहा जाता है। इन भागों में जिन रागों का प्रयोग होता हैं, उन्हें सांगीतिक भाषा में "पूर्वांगवादी राग" और "उत्तरांगवादी" राग कहा जाता है।

निहारिका, +3 तृतीय वर्ष

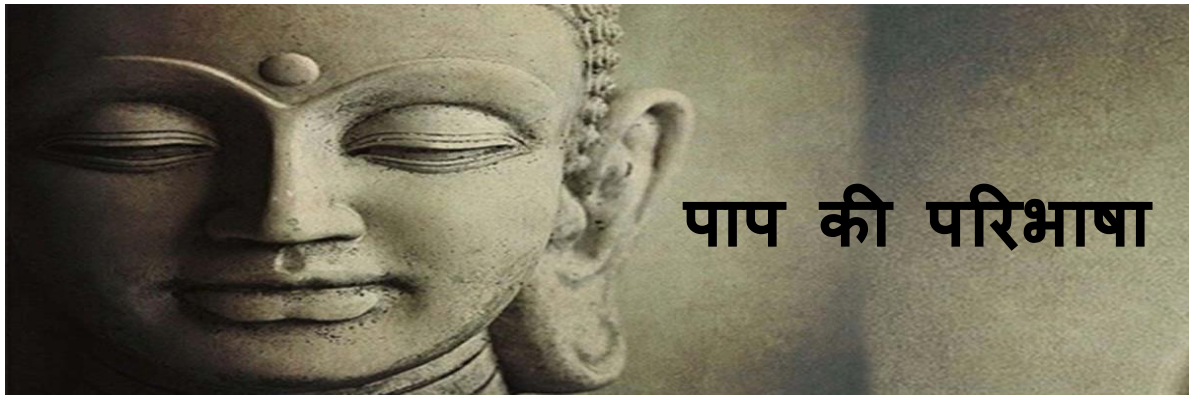

एक बार भगवान बुद्ध से एक शिष्य ने पूछा - “भगवान, क्या झूठ बोलना सदा पाप हैं?" भगवान बुद्ध बोले, “हाँ है तो, परंतु यदि किसी के कष्ट निवारण के लिए या अपनी रक्षा के लिए झूठ बोलना पड़ जाये, तो ऐसे झूठ में पाप कम है। यदि महान पुरुष से या अपने लाभ के लिए झूठ बोला जाए, तो उसमें अधिक पाप है। किसी को हानि पहुँचाने के लिए झूठ बोला जाए तो महापाप हैं।" भगवान बुद्ध का उत्तर सुनकर शिष्य ने भगवान बुद्ध के सम्मान में सिर झुका कर खड़ा था।

एक बार कुल्हाड़ी से भरा एक ट्रक वन से गुजर रहा था। सब पेड़ों ने इसे देखा। सभी पेड़ रोने लगे यह कह कर कि इन कुल्हाड़ीयों से जंगलों को काटा जायेगा। हमारा विनाश निकट है। तभी एक बुजुर्ग पेड़ ने उनकी चिन्ता का निवारण करते हुए कहा - “हमें घबराने की जरूरत नहीं है।“

सभी पेड़ों ने आश्चर्य से पूछा- “वो कैसे?"
तब उसने बताया- “जब तक हममें से हत्था बनकर कुलहाड़ी का साथ कोई नहीं देगा, तब तक अकेला कुल्हाड़ी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। मनुष्य हमें तबाह नहीं कर रहा हैं बल्कि हमारी अपनी फूट हमें नष्ट कर रहीं है।“

शरीफा शरवारी, +3 द्वितीय वर्ष

सोच

एक व्यक्ति रास्ते से गुज़र रहा था, तभी उसने देखा कि एक हाथी एक छोटे से लकड़ी के खूंटे से बंधा हुआ था। व्यक्ति को यह देख कर बड़ी हैरानी हुई कि इतना बड़ा हाथी एक पतली रस्सी के सहारे उस लकड़ी के खूंटे से बंधा हुआ है।

उस व्यक्ति ने हाथी के मालिक से कहा - “ये हाथी तो इतना विशाल है, फिर इतनी पतली रस्सी और खूंटे से क्यों बंधा है? ये चाहे तो एक झटके में इस रस्सी को तोड़ सकता है, लेकिन ये फिर भी क्यों बंधा है?”

हाथी के मालिक ने कहा कि ये जब छोटा था मैंने उस समय रस्सी से बांधा था। उस समय उसने खूंटा उखाड़ना ओर रस्सी तोड़ने की बहुत कोशिश कि थी, लेकिन ये छोटा था इसलिए नाकाम रहा। इसने हजारों कोशिश की लेकिन जब यह नहीं टूटा तो हाथी को विश्वास होगया कि यह रस्सी बहुत मज़बूत है, और यह कभी नहीं तोड़ पायेगा। इस तरह हाथी ने रस्सी तोड़ने की कोशिश खतम कर दी। आज ये हाथी इतना विशाल हो चुका है, लेकिन आज भी उसके मन में यही विश्वास है कि ये रस्सी को नहीं तोड़ पायेगा। इसीलिए यह उसे कभी तोड़ने की कोशिश हि नहीं करता। इसीलिए इतना विशाल होते हुए भी इतनी छोटी रस्सी से बंधा हुआ है।“

दोस्तों उस हाथी की तरह हम इंसानों में भी कई ऐसे विश्वास बन जाते हैं कि जिनसे हम कभी पार नहीं पा पाते। एक बार हम असफल होने के बाद मान लेते है कि ये नहीं हो सकता, और फिर कभी कोशिश ही नहीं करते। और झूठे विश्वास में बंध कर हाथी जैसी जिंदगी गुजार देते हैं।

सस्मिता महान्ती, +3 द्वितीय वर्ष

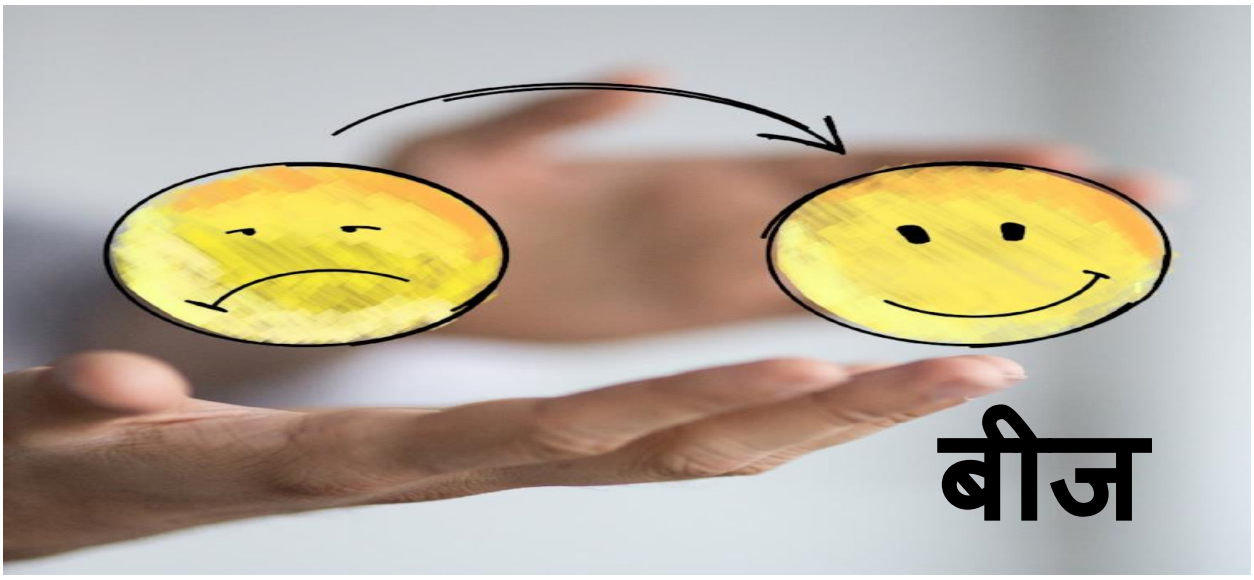

हमारे पास दो तरह के बीज होते हैं सकारात्मक विचार एवं नकारात्मक विचार, जो आगे चलकर हमारे दृष्टिकोण एवं व्यवहार रुपी पेड़ का निर्धारण करता है| हम जैसा सोचते है वैसा बन जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसा ही हमारा आचरण होता है|

यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपने दिमाग रुपी जमीन में कौन सा बीज बोते हैं| थोड़ी सी चेतना एवं सावधानी से हम कांटेदार पेड़ को महकते फूलों के पेड़ में बदल सकते हैं|

नकारात्मक से सकारात्मक की ओर:-

सकारात्मकता की शुरुआत आशा और विश्वास से होती है| किसी जगह पर चारों ओर अँधेरा है और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा और वहां पर अगर हम एक छोटा सा दीपक जला देंगे तो उस दीपक में इतनी शक्ति है कि वह छोटा सा दीपक चारों ओर फैले अँधेरे को एक पल में दूर कर देगा| इसी तरह आशा की एक किरण सारे नकारात्मक विचारों को एक पल में मिटा सकती है|

नकारात्मकता को नकारात्मकता समाप्त नहीं कर सकती, नकारात्मकता को तो केवल सकारात्मकता ही समाप्त कर सकती है| इसीलिए जब भी कोई छोटा सा नकारात्मक विचार मन में आये उसे उसी पल सकारात्मक विचार में बदल देना चाहिए|

उदाहरण के लिए अगर किसी विद्यार्थी को परीक्षा से 20 दिन पहले अचानक ही यह विचार आता है कि वह इस बार परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाएगा तो उसके पास दो विकल्प है - या तो वह इस विचार को बार-बार दोहराए और धीरे-धीरे नकारात्मक पौधे को एक पेड़ बना दे या फिर उसी पल इस नेगेटिव विचार को पॉजिटिव विचार में बदल दे और सोचे कि कोई बात नहीं अभी भी परीक्षा में 20 दिन यानि 480 घंटे बाकि है और उसमें से वह 240 घंटे पूरे दृढ़ विश्वास के साथ मेहनत करेगा तो उसे उत्तीर्ण होने से कोई रोक नहीं सकता| अगर वह नेगेटिव विचार को सकारात्मक विचार में उसी पल बदल दे और अपने पॉजिटिव संकल्प को याद रखे तो निश्चित ही वह उत्तीर्ण होगा|

सकारात्मक सोचना या न सोचना हमारे मन के नियंत्रण में है और हमारा मन हमारे नियन्त्रण में है| अगर हम अपने मन से नियंत्रण हटा लेंगे तो मन अपनी मर्जी करेगा और हमें पता भी नहीं चलेगा की कब हमारे मन में नकारात्मक पेड़ उग गए है|

जिस तरह काले रंग का चश्मा पहनने पर हमें सब कुछ काला और लाल रंग का चश्मा पहनने पर हमें सब कुछ लाल ही दिखाई देता है उसी प्रकार नेगेटिव सोच से हमें अपने चारों ओर निराशा, दुःख और असंतोष ही दिखाई देगा और पॉजिटिव सोच से हमें आशा, खुशियाँ एंव संतोष ही नजर आएगा|

यह हम पर निर्भर करता है कि सकारात्मक चश्मे से इस दुनीया को देखते है या नकारात्मक चश्मे से| अगर हमने पॉजिटिव चश्मा पहना है तो हमें हर व्यक्ति अच्छा लगेगा और हम प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई खूबी ढूँढ ही लेंगे लेकिन अगर हमने नकारात्मक चश्मा पहना है तो हम बुराइयाँ खोजने वाले कीड़े बन जाएंगे|

सोनलि राऊत, +3 तृतीय वर्ष

नारी शक्ति

भारतीय समाज में नारी को देवी माना है। हमारे ग्रंथो में भी नारी को पूजनीय बताया गया है। ईश्वर ने भी नारी को एक जननी के रूप में इस धरती पर भेजा है।

नारी एक ऐसी शक्ति है जिसे समाज ने कभी एक माँ के रूप में, कभी एक बहन के रूप में, कभी एक पत्नी के रूप में, तो कभी बेटी के रूप में पाया है।

इस बात को सभी मानते है कि देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। और नारी जिस तरह से अपने बच्चों को शिक्षा देती है वही बच्चे आगे चलकर देश का भविष्य बनते हैं।

प्राचीन काल में हमारे देश में सीता, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, इंदिरा गाँधी आदि महिलायें थी, जिन्होंने अपने कार्यों से अपनी शक्ति का परिचय दिया है।

वर्तमान समय में भी नारी हर क्षेत्र में आगे हैं। जब भी नारी को मौका मिलता है, उसने अपनी प्रतिभा दिखाई है। हमारी देश की नारियाँ किसी भी पुरुष से कम नहीं है।

क्यों है नारी अपनी पहचान से इतनी दूर? :-

एक तरफ हमारे देश की वो नारियाँ हैं जो आगे बढ़ रही हैं। दूसरी तरफ वो महिलाएं हैं, जो पढ़ी लिखी हो कर भी घर में बंद होकर रह गई है। कुछ महिलायें ऐसी भी है, जिन्हें पढ़ने

लिखने का मौका भी नहीं मिलता उन्हें हमेशा यही बताया गया है कि परिवार के हर सदस्य की जरूरत को पूरा करना और बच्चे पालना है। वह जिस तरह से अपने बच्चों को शिक्षा देती है वही बच्चे आगे चलकर देश का भविष्य बनते हैं। आज भी लड़के-लड़की में भेद समझा जाता है। शुरू से ही उन्हें कमजोर बता दिया जाता है। कोई भी उन्हें आत्म निर्भर बनने की शिक्षा नहीं देता। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में माना गया है, तो दूसरी ओर उसे बेचारी अबला भी कहा गया है। इसलिए नारी अपनी दक्षताओं को पहचान नहीं पाती। ये सारी समस्याएं हैं जो नारी के विकास में बाधक है।

निवारण:-

आज जरूरत है कि महिलाओं को आगे बढ़ने के अपने अधिकारों को पहचानने की। उन्हें ये जानना होगा कि उनके अंदर असीम क्षमतायें हैं। उन्हें जानना होगा कि वह हर चुनौती का सामना करने में सक्षम है। महिलाओं और पुरुषों दोनों का जागरूक होना अति आवश्यक है। आज का युवा वर्ग पढ़ी-लिखी और नौकरी पेशा लड़की से शादी करना चाहते हैं। उन्हें सिर्फ घर के काम करने वाली लड़की नहीं चाहिए। आज के युवा कदम से कदम मिलाकर चलने वाली अर्धांग्नी चाहते हैं। आज जो भी महिलाएं बड़-बड़े पदों पर हैं। जिन्होंने भी कोई मुकाम हासिल किया है। उन्हें उनके परिवार का विशेष सहयोग मिला है।

नारियों के विकास के लिए हमें अपने विचारों में बदलाव लाना होगा, खासतौर पर पुरूष अगर अपनी मानसिकता में बदलाव लाकर महिलाओं का सहयोग करें उन्हें जागरूक करें। उन्हें अपनी बराबरी में देखने का साहस कर सके, तो हमारे देश की उन्नति और विकास सुनिश्चित है।

जिस प्रकाश में नर और नारी एक समान दिखाई दे। जिस प्रकाश में नारियों को भी निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त हो। सही मायनों में देखा जाये तो हमारे देश के पुरुषों को देश की महिलाओं को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना होगा और उनके इस रूप को स्वीकार करना होगा तभी हमारी भारतवर्ष की उन्नति सम्भव है।

कादम्बिनी पंडा, +3 तृतीय वर्ष

शोषण

हम सभी शोषण नाम के शब्द को अच्छी तरह से समझते हैं। शोषण कई रूपो में ओर कई तरह से किया जाता है। जिसके बारे में आए दिन हम सभी अख़बारों में, खबरों में सुनते रहते हैं। सामाजिक शोषण को कई बार हम पहचान नहीं पाते इसलिए उसको सहन करते हैं। जबकि इनका विरोध भी उसी प्रकार से करना चाहिए जिस प्रकार से अन्य शोषण का विरोध किया जाता है। इस प्रकार का शोषण अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष प्रहार करता है। जो कई बार जानलेवा भी होता है।

सामाजिक शोषण क्यों है? किस लिए है? क्यों हम बेहतर और बेहतर बनना चाहते हैं? क्यों खुद को सामान्य ओर औसत होना स्वीकार नहीं करते हैं? क्यों हम जैसे है वैसे खुदको स्वीकार नहीं करते? क्यों? हाँ यह समय की मांग है। आधुनिकता और बदलते परिवेश के मीटर में खुदको फिट बैठाने का चलन है, पर ऐसे कैसे?

ईश्वर की बनाई इस दुनिया में सभी सजीव ओर निर्जीव वस्तु अपने आप में पूर्ण हैं। बेहतर हैं। फिर क्यों उसे हम सिर्फ किसी के कहने भर से या किसी विपरीत सोच के कारण बदले सामाजिक शोषण के कारण अक्सर लोग तानो से तंग आकर अपने को बदलने में लग जाते हैं? मोटी लड़कियां पतले होने के चक्कर में खाना-पीना बंद कर देती है। जो बीमारियों को निमंत्रण देता है। अपनी परेशानियों से तंग आकर लोग नौकरी, घर, रिश्ते ओर कई बार दुनिया छोड़ जाते हैं। जो अपने पीछे अनसुलझे जवाब ओर अपने परिवार वालो को छोड़ जाते हैं। बेहतर होना गलत नहीं और ना ही इसके लिए प्रयास करना गलत है। परंतु बेहतर बनने की ललक में

अपने जीवन से खिलवाड़ करना और खुद को नुकसान पहुंचाना गलत है। निंदनीय है।

परिवार के सदस्य आपस में एक दूसरे को पहले मजाक में तानाकशी करते हैं जो कभी कभी तो सहनशील होता है, पर अधिक हो जाने पर ये सहन करने वाले का शोषण बन जाता है। और यह अलगाव, झगड़े ओर पतन कि ओर ले जाता है। जो परिवार और रिश्तों में बिखराव लाता है। सामाजिक शोषण का होना व्यक्ति के ईगो से है।

प्रतिभा होते हुए भी लोग अपनी असल मंजिल तक नहीं पहुंच पाते या उन्हें पहुँचने नहीं दिया जाता, क्योंकि कुछ कुंठित और अपने ईगो के चलते लोग अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति को आगे नहीं आने देना चाहते हैं इसलिए किसी न किसी तरह उसकी प्रतिभा का हनन करते हैं। उसे शोषित करते हैं। हमारे बड़े ही हमें सिखाते आये है "बुरा न बोलो, किसी का दिल ना दुखाओ, कुछ ऐसा न करो जिससे किसीका जीवन प्रभावित हो, दूसरों की मदद करो, मिलकर रहो और न जाने क्या क्या। पर इन सबके उल्लंघन की शुरुआत हमारे सिखाने वाले ही करते हैं। क्यूँ? किस लिए?

किसी को नीचा दिखा कर, चिढ़ा कर मजाक बना कर लोगों को क्या मिल जाता है? कब समझेंगे लोग अपने क्षण भर के आनंद और सुकून के लिए किसी की भवनाओं ओर जीवन से खिलवाड़ करना कब बंद करेंगे लोग... कब ? जिस तरह का व्यवहार हम सहन नहीं कर सकते वही हमें सामने वाले के लिए भी करना चाहिए। प्रतियोगिता रखना सही है, आगे निकलना भी सही है, तरक्की भी सही है मगर किसी को नीचा दिखा कर उसका शोषण करना सही नहीं है।

हम सभी स्वस्थ वातावरण ओर विकसित समाज में रहना चाहते हैं तो उसकी शुरुआत भी हमें खुद ही करनी होगी। अपने आप को इस शोषण शब्द से दूर करना होगा न केवल शोषण रोकने के लिए बल्कि खुद शोषित न होने के लिए भी और यही हमारे परिवार की और फिर हमारे सम्पूर्ण समाज की भलाई होगी।

आवश्यकता है लोगों की स्वस्थ मानसिकता की जो किसी व्यक्ति को विकसित करने के लिए हो, प्रोत्साहित करने के लिए हो, मिलकर रहने और विकास के लिए हो।

बहुत सरल और सीधी सी बात है "खुश रहिये और रहने दीजिए यही मानिये और यही अपनाइये।“

सोनिया नायक, +3 तृतीय वर्ष

चिरैया

सावधान हो विचर चिरैया
यहां घुमते बाज।

कदम-कदम पे मानुष रहते
फिरभी जग सुनसान ,
पता न चलता कौन देवता
किसका मन हैवान ,
जाने कौन रोक दे आकर
कब तेरी परवाज।

आसमान छूने का तू है
बैठी पाल जुनून ,
लेकिन इस नगरी में चलता
जंगल का कानून ,
आज यहाँ कल वहां गिर रही
तुझ जैसों पे गाज।

देख चिरैया ! इस जंगल में
दिन में भी अंधियार ,
अक्सर घात लगाकर अपने
ही करते हैं वार ,
क्षण भर में देते बिगाड़ वो,
जीवन भर का साज।

मनीषा, +3 ।। वर्ष

मेरी गुरु माँ

ना जाऊंगी में मंदिर, ना जाऊँगी में मसजिद
ना जाना है मुझे गिरजा,
पास है मेरी एक ऐसी इन्सान
जिसका दर्जा भगवान से भी ऊँचा।
वह है लक्ष्मी, वह है सरस्वती,
वह है माँ पार्वती की स्वरूप।
कोई नहीं इस दुनिया में उनके जैसे
वह है मेरी प्यारी गुरु माँ।
अपने संतान जैसी प्यार करती है हमको
जैसे कोई ममता की मूरत,
गलती को हमारी सुधारती है वो
हमें अच्छे से समझाकर,
ना कभी करूँगी उनका असम्मान
यह है मेरा प्रण।
श्रद्धा और सम्मान का हार
उनको करती हूँ मैं अर्पण।
वह है मेरी प्यारी गुरु माँ
चरणों में मेरा कोटि कोटि नमन।

श्रद्धांजली, +3 ।। वर्ष

जिंदगी के मैदान में

जिंदगी के मैदानों में
अजीब सी धुन बजा रखी है
जिंदगी ने मेरे कानों में,
कहाँ मिलता है चैन
पत्थर के इन मकानों में ।
बहुत कोशिश करते हैं
जो खुद का वजूद बनाने की
हो जाते हैं दूर अपनों से
नजर आते है बेगानों में।
हस्ती नहीं रहती दुनिया में
इक लंबे दूर तक,
आखिर में जगह मिलती है
उन्हें कहीं दूर स्मसानों में।
न कर गम कि
कोई तेरा नहीं,
खुश रहने की राह है
मस्ती के तरानों में
जान ले कि दुनिया
साथ नहीं देती,
कोई दम नहीं होता
इन लोगों के अफसानों में।
क्यों रहता है निराश
अपनी ही कमजोरी से
झोंक दे सब ताकत अपनी
करने को फतह मैदानों में।
खुद को करदे खुदा के हवाले
ऐ इंसान
की असर होता है
आरती और अजानों में,
करना है बसर तो
किसी की खिदमत में कर
वरना क्या फर्क है
तुझमें और शैतानों में।
करना है तो कर गुजर कुछ।
किसी और की खातिर
बन जाए अलग अलग पहचान
तेरी इन इंसानों में।

लिज़ालीन, +3 द्वितीय वर्ष

शहरों में एक निराला शहर
कोलकाता माँ काली की भूमि
बंगला भाषा की मिठास लिये
सारे विश्व में घुल रही है कोलकाता
यह है कोलकाता हमारी!!!

खाने में हो बस चावल
और साथ में माछेर झोल
मिष्टी दोई, रसगुल्लों का स्वाद
गंगा में मिल मिठास फैलाती
गंगा धोती सबके पाप
यह है कोलकाता हमारी!!!

रत्नगर्भा है यह धरती
महान साहित्यकारों की जन्मभूमि
वंदे मातरम् की है जननी
सुभाष के आजाद हिंद फौज की धरणी
यहां विक्टोरिया का सौन्दर्य है
जगमगाया
यह है कोलकाता हमारी!!!

शबाना बेगम, +3 तृतीय वर्ष

आपकी बात

पूर्व की भाँति हिंदी भारती का ये अंक भी सुरुचिपूर्ण है, विशेषतः रथयात्रा पर प्रस्तुति उत्कृष्ठ है। छात्राओं द्वारा प्रस्तुति प्रशंसनीय है, जो हिंदी के प्रति उनके अनुराग को प्रदर्शित करता है। छात्राओं द्वारा लिया गया साक्षात्कार प्रभावी बन पड़ा है, जो उनमें निहित पत्रकारिता के गुण को प्रकाशित करता है।

विभाग की सभी विद्यार्थियों और संपादक मंडल की भूरी भूरी प्रशंसा करता हूँ, तथा आपको भविष्य के प्रयासों हेतु शुभकामनाएं।

प्रोफेसर एस. के. चतुर्वेदी
भू. पू. विभागाध्यक्ष
राजनीति शास्त्र विभाग
भू. पू. प्रो वाईस चांसलर
मेरठ विश्वविद्यालय

कमला नेहरु महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग का ये प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। महाविद्यालय के इतिहास में ये अपनी तरह का एक अनूठा प्रयास है। इससे छात्राओं में निहित लेखन प्रतिभा को नई दिशा एवं प्रोत्साहन मिल रहा है। विविध विषयों पर छात्राओं के लेख बहुत ही रोचक हैं। हिंदी भारती इन

नवोदित लेखन प्रतिभाओं को बखूबी सम्हाल रहा है। यहाँ से प्राप्त मार्गदर्शन इन्हें भविष्य में लेखन के ऊँचे शिखर पर ले जायेगा। हिंदी विभाग को हार्दिक अभिनंदन एवं भविष्य के लिये शुभकामनायें।

श्रीमती नमिता पट्टनायक
अवकाश प्राप्त अध्यापिका
राजनीतिशास्त्र विभाग
कमला नेहरु महिला महाविद्यालय
भुबनेश्वर

कमला नेहरु महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग पहला विभाग है जो अपनी पत्रिका निकालता है, जो मासिक है। इसमें छात्राओं के सृजनात्मक रचनाओं के साथ साथ शोधपरक लेख भी स्थान पाते हैं, जो तारीफ़ के काबिल हैं। यह पत्रिका सिर्फ एक शुरुआत है, अभी बहुत दूर जाना है। छात्राओं को इस यात्रा में हर कदम पर सफलता मिले, यही मेरी शुभकामना है। इस सफल प्रयास के लिये डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी को हृदय से अभिनंदन एवं आभार। आशा है महाविद्यालय के अन्य विभाग भी इससे प्रेरित होंगे।

विभाग की सभी विद्यार्थियों और संपादक मंडल की भूरी भूरी प्रशंसा करता हूँ, तथा आपको भविष्य के प्रयासों हेतु शुभकामनाएं।

डॉ. ज्योत्सना महंती
विभागाध्यक्षा
नृविज्ञान विभाग
कमला नेहरु महिला महाविद्यालय
भुबनेश्वर

हिंदी भारती छात्राओं के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने वाला अभिनव प्रयास है। हर रचना छात्राओं की व्यक्तिगत महक और चिंताधारा को प्रस्फुटित करती है। इन नवीन प्रतिभाओं की सारस्वत साधना परिमार्जित होती रहे यही कामना करती हूँ।

डॉ. ज्योत्सनामयी राउत
अध्यापिका, ओड़िया विभाग
कमला नेहरु महिला महाविद्यालय
भुबनेश्वर

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मैं हिंदी भारती पत्रिका की सदस्य हूँ। मैं अपनी प्रिय वेदुला मैडम को धन्यवाद देना चाहती हूं, कि मुझे 'आपकी बात' में उन्होंने शामिल किया। खास करके मुझे पिंकी की कहानी बहुत अच्छी लगी, और अहंकार लेख भी बहुत अच्छा है। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर पूरन चंद टंडन जी को बहुत बहुत धन्यवाद वे हमारी ई-पत्रिका की सदस्य बने। इस पत्रिका की वजह से हम सबको हिंदी लेखन के लिए एक सशक्त मंच मिला है, जिसके माध्यम से हमारे लेखन को पहचान मिल रही है। यह सब आप सुधी पाठकों की वजह से ही संभव हो पा रहा है, आप सबको शत शत नमन।

कु. लिज़ा मिश्र
+3 तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग
कमला नेहरु महिला महाविद्यालय
भुबनेश्वर

हमारे विभाग की ई-पत्रिका " हिंदी भारती " के जून के अंक में हिन्दी भारती अपनी सफलता की ओर कदम बढ़ाते हुए "एक मुलाकात" शीर्षक के अंतर्गत विशिष्ट 'साहित्यकार और अनुवादक डॉ. शंकरलाल पुरोहित जी के साक्षात्कार को प्रकाशित हुआ, जो कि नवीनता का प्रतीक है। यह साक्षात्कार केवल ई पत्रिका में विभाग का एक नूतन प्रयास ही नहीं बल्कि हमारे जैसे छात्राओं के लिए प्रेरणा भी है। विभाग का एक अंश होने के नाते यह आशा करती हूं कि विभाग का यह प्रयास हमें ऐसे ही प्रेरित करता रहे और हिन्दी भारती ऐसे ही अपने हर एक अंक के साथ सफलता की ओर कदम बढ़ाती रहे।

शुभश्री शताब्दी दास ,
+3 द्वितीय वर्ष, हिन्दी विभाग
कमला नेहरु महिला महाविद्यालय
भुबनेश्वर

कफन

प्रेमचंद

https://youtu.be/_VAQcTH0f2s

यादों के गलियारों से

प्रभा खेतान फाउंडेशन, कोलकाता द्वारा आयोजित "कलम" में प्रसिद्ध लेखिका अनु सिंह जी तथा प्रभा खेतान फाउंडेशन से अनिंदिता जी के साथ

प्रेमचंद जयंती के अवसर पर विभाग में

धन्यवाद